सत्य एवं अहिंसा के पुजारी महात्मा गाँधी

डॉ. रजनी दुबे
प्राध्यापक राजनीतिविज्ञान
शासकीय स्वशासी कन्या स्नातकोत्तर उत्कृष्टता महाविद्यालय, सागर (म.प्र.)

आजादी के पथ प्रदेयक, महान व्यक्तित्व के धनी सरलता, सौजन्यता और उदारता की मूर्ति व अहिंसा के कटु पक्षधर राष्ट्र पिता महात्मा गाँधी आज भी उतने ही प्रासंगिक है, जितने की उस समय थे।

महात्मा गाँधी ने कहा था कि भारत की आत्मा गॉव में बसती है। उन्होने अपने सपनों के भारत में गॉ के विकास को प्रमुखता प्रदान करके उससे देश की उन्नति निधारित होने की बात कही थी। गाँधी ने अपने सपनों के भारत में अपनी व्यापक दृष्टि का परिचय देते हुये ग्रामीण विकास की तमाम आवश्यकतों की पूर्ति करके ग्राम स्वराज्य, पंचायत राज, ग्रामों उद्योग, महिलाओं की शिक्षा, गॉव की सफाई व गॉव का आरोग्य व समग्र विकास के माध्यम से एक स्वावलंबी व सशक्त देश निर्माण का मार्ग प्रशस्त किया था।

गॉवो में ग्रामोद्योग की दयनीय स्थिति से चितिंत गाँधी ने स्वदेशी अपनाओ, विदेशी भगाओ के जरिये गॉवो को खादी निर्माण से जोड़कर अनेक बेरोजगार लोगों को रोजगार देकर स्वतंत्रता आंदोलन में उनकी भूमिका को रेखांकित किया।

गांधीजी उन विरले चिंतकों में थे जिन्हें भारत की राजनैतिक आर्थिक व्यवस्था की गहरी जानकारी थी इसलिये वे इस देश के योग्य शासन व्यवस्था की कल्पना कर सकें जिसकी विभिन्न राजनैतिक दल उत्तरोत्तर अवहेलना करते गये। गांधीजी अपने अंतिम समय तक भारतीयों को यह समझाने में लगे रहे कि उन्हें आजादी के बाद जो उपयुक्त शासन व्यवस्था बनाना है, वह बिना सहकार और सद्रभाव के नहीं बन सकती।

उन्होने स्वराज्य की अवधारणा को स्पष्ट करते हुये कहा था कि स्वराज्य का मतलब अधिकाधिक हिन्दुओं का प्रमुत्व न होकर हमें जाति के भेद-भावों से अछूते रहकर एक समतामूलक समाज का लोकसम्मति से शासन करना है। इसको लेकर उन्होने समय-समय पर यंग इण्डिया हरिजन, हरिजन सेवक जैसी पत्र-पत्रिकाओं में अपने विचारों को उजाकर किया। गांधी भारतीय महिलाओं के पुर्नरूत्थान व उनकों सामाजिक कुरीतियों व रूढ़िओं से मुक्त कराने के लिये प्रतिवद्य थे। वे महिलाओं के सम्मान के लिये उनके समान अधिकार व देश के सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक विकास में उनकी महत्तवपूर्ण सहभागिता के पुरजोर समर्थक थे।

गांधी दर्शन के चार आधारभुत सिद्धांत सत्य, अहिसा, प्रेम व सद्भाव एक सशक्त समाज व राष्ट्र निर्माण के घटक ही नहीं वल्कि एक सच्चे व नैकदिल इंसान की व्यक्तिगत एवं चारित्तिक विशेषतायें भी है।

बचपन में सत्यवादी राजा हरिशचंद्र की जीवन कथा से प्रभावित होकर गांधी ने सत्य को ही अपना परमेश्वर मानने का निश्चय किया आगे ताउम्र सत्य की बुनियाद पर हर असंभव कार्य को संभव करने का साहस कर दिखाया। उनके अनुसार अहिंसा का अभिप्राय किसी को भी मन, कर्म, वचन और वाणी से तकलीफ नहीं पहुंचाना है। ईर्ष्या, घृणा, राग-द्वेष व परनिंदा से परहेज कर झूठ, अपशब्द, निष्प्रयोजन, वाद-विवाद व वाचक हिंसा से तटस्थ रहना है। उनका मानना था कि अहिंसा के बिना सत्य की खोज करना संभव नहीं है

सत्य साध्य है तो अहिंसा साधन/प्रेम और सद्भाव से ही किसी भी पत्थर दिल को मोम की तरह ढलाया जा सकता है। स्वच्छता गांधीजा के जीवन का अनिवार्य अंग थी स्वच्छता को लेकर गांधीजी का मानना था कि यदि कोई व्यक्ति स्वच्छ नहीं है तो वह स्वस्थ नहीं रह सकता।

पंडित जवाहर लाल नेहरू ने 15 अगस्त 1947 की मध्यरात्रि में दिये गये प्रसिद्ध भाषण में महात्मा गांधी को भारत की भावना का अवतार बनाते हुये कहा था कि उनके संदेश को भावी पीढ़ियां याद रखेगी। संदेश क्या था ? महात्मा दुनिया के पहले सफल अहिंसा आंदोलन के अप्रतिम नेता थे। उनकी आत्म कथा थी - सत्य के प्रयोग। दुनिया की कोई भी डिक्शनरी सत्य के अर्थ को उतनी गहराई से परिभाषित नहीं करती जितना गांधीजी ने किया। उनका सत्य उनके दृढ़ मन से निकला था। यानि यह केवल सटीक नहीं था, लेकिन यह न्याय पूर्ण था इसीलिये सही था। गांधीजी की अहिंसात्मक नागरिक अवज्ञा की ताकत यह कहने में निहित है यह दिखाने के लिये आप गलत है, मैं खुद को दंडित करूंगा।

नैतिकता के बिना गांधीवाद वैसा ही है जैसे कि सर्वहारा के बिना माकर्सवाद। इसके बाद भी जिन लोगों ने यह तरीका अपनाया वह उनकी व्यक्तिगत ईमानदारी और नैतिकता है। जबरन हड़ताल पाखंडी श्रमिक धरना और धरनों के दुरूपयोग से यही पता चलता है कि दुनिया गांधीजी के सत्य के विचार से कितना गिर गई है।

इससे गांधीजी की महानता कम नहीं हुई है। जब दुनिया फासीवाद, हिंसा और युद्ध में बट रही थी महात्मा गांधी ने हमें सत्य, अहिंसा और शांति का मतलब सिखाया। उन्होने ताकत का मुकाबला सिद्धांतो से करके उपनिवेशवाद की विश्वसनीयता खत्म कर दी। उन्होने ऐसे व्यक्तिगत माप दंडों को हासिल किया जिसकी बराबरी शायद ही कोई कर सके। वह एक ऐसे दुर्लभ नेता थे, जिनका दायरा सर्मथकों तक सीमित नहीं था। अनके विचारों की मौलिकता और उनकी जिन्दगी के उदाहरण आज भी दुनिया को प्रेरणा देते है। लेकिन हमें आज भी गांधीजी से बहुत कुछ सीखने की जरूरत है।

हमारे देश में भले ही महात्मा गांधी को उनकी जयंती और पुण्य तिथि पर रस्मी श्रद्धांजलियों तक सीमित कर दिया गया है, लेकिन यह भी हकीकत है कि गांधी पूरी दुनिया में शांति और अहिंसा के प्रतीक बन गये है।

डॉ. राधाकृष्णन का कथन है कि गांधीजी को सदैव एक नैतिक और आध्यात्मिक क्रांति के मसीहा के रूप में याद किया जाता रहेगा। क्योकि उनके बिना अशांत विश्व को शांति प्राप्त नहीं हो सकती।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. समाज कल्याण, अक्टूबर 2010
2. नवदुनिया, 26 जनवरी 2014
3. अहा जिन्दगी, अकटूबर 2013
4. दैनिक भास्कर, 21.10.2018
5. दैनिक भास्कर, 13.03.2020
6. Dr. S.Radha Krishnan: Mahatma Gandhi, 100 years
7. अन्य पत्र एवं पत्रिकायें।